بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुत्बः जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मूदा 31 july 2026, स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, यू.के.
(वफ़ा महीने की तिथि 31,1405 हश)

जलसा सालाना बर्तानिया के हवाले से अफ्ज़ाले इलाहिया और ग़ैर अज़-जमाअत मेहमानों के तास्सुरात का तज़करा।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba- 31.07.2026
محلہ احمدیہ قادیان،پنجاب،143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ ۔

तशहहुद, तअव्वुज़ और सूरः अल-फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुजूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहू तआला बिनसृहिल अज़ीज़ ने फ़रमायाः अल्लाह तआला के फ़ज़ल से गुज़श्ता इतवार को जमाअत अहमदिय्या बर्तानिया का तीन दिन का जलसा सालाना अल्लाह तआला के फ़ज़लों को समेटते हुए अपने इख़्तिताम को पहुँचा। जलसे की तैयारी में महीनों लगते हैं। एक जलसे के बाद ही अगले जलसे की तैयारी शुरू हो जाती है। इस का ज़ोर जलसे से चंद हफ़्ते पहले शुरू हो जाता है और फिर जलसे से एक दो हफ़्ते पहले तो यह इंतहाई बढ़ जाता है और जलसे के दिनों में हज़ारों रज़ाकार मर्द-ओ-ज़न, बूढ़े, जवान, अपनी तमाम तर सलाहियतों और इख़लास के साथ हमह वक़्त ख़िदमत कर रहे होते हैं।

पस इस लिहाज़ से तमाम कारकुनान जो जलसे के किसी भी शोबे में काम करते रहे हैं वह शुक्रिया के मुस्तहिक़ हैं। अल्लाह तआला उन्हें इस ख़िदमत की बेहतरीन जज़ा दे। इसी तरह एमटीए के कारकुनान हैं जिन में अक्सरियत रज़ाकारों की है। फिर प्रैस एंड मीडिया की टीम है। ख़ुद्दाम-उल-अहमदिय्या कनाडा के ख़ुद्दाम हर साल की तरह बड़ी तादाद में यहाँ आए और वाइंड अप में ख़िदमत की। अब ऑस्ट्रेलिया वालों ने भी आना शुरू किया है, यह सब बहुत उम्दा तरीक़ पर काम कर रहे हैं।

मैं ख़ुद भी तमाम कारकुनान और कारकुनात का शुक्रिया अदा करता हूँ, मगर साथ ही उन्हें यह याद रखना चाहिए कि उन्हें ख़ुद भी ख़ुदा तआला का शुक्रगुज़ार होना चाहिए कि अल्लाह तआला ने इन सब कारकुनान को तौफ़ीक़ दी कि वह हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) के मेहमानों की ख़िदमत करें।

लोगों के शुक्रगुज़ारी के इज़हार से आप लोगों को मज़ीद ख़ुदा के आगे झुकना चाहिए, और अधिक विनम्र बनना चाहिए, अल्लाह ताला इसकी आपको तौफीक दे।

हुज़ूर फ़रमाते हैं: काम करने वालों के अज़्म और जज़बे से इस्लाम और अहमदिय्यत की तब्लीग़ भी होती है। कई लोग अपने जज़बात और मुशाहिदात तब्सिरों की सूरत में लिख कर भेजते हैं। इन में से बाज़ मैं अभी पेश करूँगा।

गाम्बिया के वज़ीर-ए-मवासिलात लिखते हैं कि जलसा सालाना की एक गहरी हक़ीक़त को देख कर मैं शशदर रह गया। यह एक अज़ीम आलमी इज्तिमा है जो बे-लौस ख़िदमत और ख़ामौश ग़ैर-मुतज़लज़िल क़ुर्बानी की बुनियाद पर क़ायम है।

नाइजीरिया से एक बादशाह हैं जिन के ज़ेर-ए-इंतज़ाम तक़रीबन आधी स्टेट है, वह कहते हैं: जब मैं जलसा सालाना यूके के लिए रवाना हुआ तो मुझे अंदाज़ा नहीं था कि मैं एक अज़ीमुश्शान मुनज़्म और रूहानी इज्तिमा का हिस्सा बनने जा रहा हूँ जो मेरी ज़िंदगी में इतना गहरा असर छोड़ेगा। यहाँ पहुँच कर मैं ने न सिर्फ़ ग़ैर-मामूली नज़्म-ओ-ज़ब्त, अख़ुव्वत, और ख़िदमत-ए-ख़ल्क़ का अमली नमूना देखा बल्कि दुनिया के विभिन्न मुमालिक और क़ौमियतों से तअल्लुक़ रखने वाले अफ़राद को मोहब्बत, एहतराम और भाईचारे के रिश्ते में बँधा हुआ पाया।

उन की अहलिया ने कहा कि मुझे सबसे ज़्यादा हैरत ख़वातीन के लिए किए गए मिसाली इंतज़ामात, उन की इज़्ज़त, आज़ादी और माहौल को देख कर हुई। हज़ारों ख़वातीन को इंतहाई वक़ार के साथ मुनज़्म तरीक़ पर जलसे में आते जाते देख कर मेरे इस्लाम के बारे में कई तसव्वुरात बदल गए हैं।

सेनेगल से साबिक़ गवर्नर सेंट लुईस बतौर मेहमान शरीक हुए। वह कहते हैं: मैं ने सारी तक़रीरों को तवज्जो से सुना, तर्जुमे का इंतज़ाम बहुत उम्दा था जिस की बदौलत हम तमाम तक़ारीर और पैग़ामात को बख़ूबी समझ सके। जलसे के दौरान जो पैग़ाम सबसे ज़्यादा नुमायाँ हुआ वह मोहब्बत, अमन और भाईचारे का पैग़ाम था।

लक्ज़मबर्ग से एक बैरिस्टर साहब तशरीफ़ लाए थे। वह कहते हैं: जलसे के तीन दिन मेरी ज़िंदगी के अहम तरीन तीन दिन बन गए हैं। मैं ने अपनी ज़िंदगी में पहली बार इतना बड़ा, मुनज़्म इस्लामी इज्तिमा देखा है। आलमी बैअत का रूह-परवर नज़ारा मेरे लिए नाक़ाबिल-ए-फ़रामोश था। इमाम-ए-जमाअत से मेरी मुलाक़ात हुई। गो कि मुलाक़ात से पहले मुझे घबराहट थी, मगर उन से मिलते ही घबराहट दूर हो गई। एक नौ-मुबायै कहते हैं कि इस्लाम क़बूल करने से क़ब्ल मेरा तअल्लुक़ ईसाइयत से था। हमें सिखाया जाता था कि ईमान का तअल्लुक़ मौसिक़ी से है मगर मैं कभी भी इस अंदाज़ से रूहानी सुकून और क़ुर्ब-ए-इलाही महसूस न कर सका। मुसलमान होने के बाद भी मैं गो नमाज़ें वग़ैरा पढ़ता था मगर रक़्क़त महसूस नहीं कर पाता था, मगर जलसे में शामिल होकर मुझ पर ऐसी रूहानी कैफ़ियत तारीख़ हुई कि मेरी आँखों से आँसू जारी हो गए, मैं मुसलसल दुआएँ माँगता रहा। मेरा अल्लाह तआला से और ख़िलाफ़त से एक रूहानी तअल्लुक़ क़ायम हो गया।

चेक रिपब्लिक से दो प्रोफ़ेसर साहबान तशरीफ़ लाए थे, वह कहते हैं वापस चेक रिपब्लिक जाकर हम अपने साथियों और तलबा को यह बताएँगे कि आप ख़ुद जाकर इस अज़ीमुश्शान महफ़िल का मुशाहिदा करें। ख़लीफ़ा-ए-वक़्त के ख़िताब के बाद हमें इस्लाम और तक़्वा की हक़ीक़ी पहचान हासिल हुई।

क़ज़ाक़स्तान से एक ख़ातून जलसे में शामिल हुईं वह कहती हैं कि इमाम-ए-जमाअत और दीगर मुक़र्रिरीन की तक़ारीर में ईमान, आला इख़लाक़ और बाहमी हम-आहंगी, नौजवानों के मसाइल और मुआशरे की तरबियत जैसे अहम उमूर पर रोशनी डाली गई।

अमेरिका से एक क़ानून के प्रोफ़ेसर साहब ने कहा कि मुझे दुनिया भर में कन्वेंशनों और कॉन्फ्रेंसों में शामिल होने का मौक़ा मिला है मगर जलसा सालाना यूके का तजरबा इन सब से मुनफ़रिद रहा है। सौ से ज़्यादा मुमालिक से आए हुए लोग, विभिन्न मज़ाहिब, क़ौमियतों और शोबा-हा-ए-ज़िंदगी से तअल्लुक़ रखने वाले लोगों से मुलाक़ात हुई। विभिन्न नुमाइशों ने मुझे बहुत मुतास्सिर किया। आला तालीम-याफ़्ता डॉक्टर्ज़, इंजीनियर्ज़, वुकला और दीगर उलूम के माहिरीन निहायत आजिज़-ई से ख़िदमात सरअंजाम दे रहे थे, इस चीज़ ने मुझे बेहद मुतास्सिर किया।

ब्राज़ील से एक टेलीविज़न रिपोर्टर कहते हैं कि मैं इस तक़रीब के अज़ीमुश्शान पैमाने और वुसअत को देख कर हैरान रह गया हूँ बिल-ख़ुसूस लंगर ख़ाने का हजम और वह तमाम जगहें जहाँ खाना तैयार किया जाता है निहायत वसी, जदीद, मुनज़्म और निहायत साफ़ सुथरा था।

फ़िलीपींस से प्रोफ़ेसर साहब अपनी अहलिया के साथ तशरीफ़ लाए जो ख़ुद भी प्रोफ़ेसर हैं। वह कहते हैं कि रज़ाकारों की मेहनत देख कर हैरानी हुई कि किस तरह वह अपनी मेहनत से यह आरज़ी शहर बसाते हैं।

अल साल्वाडोर से एक मेहमान जो सेंट्रल अमेरिकन पारलीमान में अल साल्वाडोर के नुमाइंदे हैं वह कहते हैं कि ख़लीफ़ा-ए-वक़्त से मुलाक़ात के बाद मुझे यक़ीन हो गया है कि ख़लीफ़ा-ए-वक़्त को अपनी जमाअत के बारे में बहुत मालूमात होती हैं।

बेलीज़ से एक नौ-मुबायै ख़ातून कहती हैं: हमारा तअल्लुक़ एक बहुत छोटे मुल्क से है। मैं जिस शहर में रहती हूँ उस की आबादी पचास हज़ार है। सौ आदमी भी अगर कहीं जमा हो जाएँ तो झगड़े शुरू हो जाते हैं, मगर जलसे के एहतमाम में ग़ैर-मामूली अमन था।

बुल्गारिया से एक साहब-ए-असर शख़्सियत ने कहा कि जलसे में होने वाली तक़ारीर बहुत मालूमाती, इल्मी और आला मइयार की हामिल थीं। मुक़र्रिरीन ने मज़हबी और साइंस-ई मौज़ूआत को बहुत अहसन रंग में पेश किया जिस से हाज़िरीन के इल्म-ओ-माअरिफ़त में इज़ाफ़ा हुआ।

सेनेगल से एक साहब जो अपने इलाके के मज़हबी रहनुमा हैं। वह कहते हैं: इमाम-ए-जमाअत से मेरी मुलाक़ात हुई इस से मुझे जमाअत को समझने का बहुत मौक़ा मिला। हक़ीक़त यह है कि मैं आप को दिल की गहराइयों से ख़िराज-ए-तहसीन पेश करता हूँ।

सेनेगल से एक मेम्बर पारलीमान शरीक हुए वह कहते हैं: लफ़्ज़ी इस्लाम से बढ़कर यहाँ मैं ने हक़ीक़ी ख़िदमत वाला इस्लाम देखा। ऐसे हाथ देखे जो देने वाले हैं, ऐसे दिल देखे जो मुआफ़ करने वाले हैं, ऐसे दरवाज़े देखे जो दूसरों के लिए हमेशा खुले रहते हैं।

कोसोवो से एक निहायत मोहतरम शोधकर्ता/मुहक़्क़िक़, माहिर-ए-तालीम प्रोफ़ेसर साहब जलसे में शरीक हुए। वह कहते हैं कि इमाम-ए-जमाअत की तक़ारीर सुनने का मौक़ा मिला, उन से मुलाक़ात भी हुई। जिस चीज़ ने मुझे सबसे ज़्यादा मुतास्सिर किया वह अमन, बैन-उल-मज़ाहिब हम-आहंगी, इंसान-ई मुसावात, बाहमी एहतराम और मुआशरे के हर फ़र्द को साथ ले कर चलने पर मुसलसल और ग़ैर-मामूली ज़ोर था।

स्पेन से पेड्रो आबाद के मेयर तशरीफ़ लाए। वह कहते हैं: जलसा सालाना ने हमें यह देखने का मौक़ा दिया कि यह सिर्फ़ अक़ीदे का जश्न नहीं बल्कि यह विभिन्न मुमालिक, सक़ाफ़तों और हक़ायक़ से तअल्लुक़ रखने वाले लोगों के दरम्यान बग़ा-ए-बाहमी का एक ग़ैर-मामूली मुज़ाहिरा है।

इसी तरह हुज़ूर-ए-अनवर ने बाज़ दीगर मुअज्ज़ज़ मेहमानान के भी मुशाहिदात और तास्सुरात पेश फ़रमाए जिन्होंने जलसे के ग़ैर-मामूली इंतज़ाम और रूहानी माहौल को सराहा था।

यूनान से एक मेहमान ख़ातून ने जलसे के जुमला उमूर की तरीफ़ करने के साथ एक बात का ज़िक्र करते हुए कहा कि वह मुझे पसंद नहीं आई और वह यह कि बाज़ ख़वातीन इस्लामी ड्रेस कोड (परदे) की अच्छी तरह पैरवी नहीं कर रही थीं और बाज़ मर्द भी ग़ज़-ए-बसर में कमज़ोरी दिखा रहे थे।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: हालाँकि मैं ने इस बारे में ख़ास तौर पर तलक़ीन की थी। मनफ़ी तब्सिरे को भी अपनी इस्लाह के लिए हमें सुनना चाहिए। पस जो बे-एहतियाती करते रहे हैं उन्हें याद रखना चाहिए कि ग़ैर हमें बड़ी गहरी नज़र से देखते हैं और हमें उन्हें कोई ऐसा मौक़ा नहीं देना चाहिए जिस से इस्लाम की हक़ीक़ी तस्वीर पर दाग़ आए। जलसे की तक़रीरों के दौरान मैं ने हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) का एक इक़्तिबास भी पढ़ा था कि ग़ैरों को ऐसा मौक़ा न दो कि वह हम पर उँगली उठाएँ।

हुज़ूर-ए-अनवर ने जलसे की प्रैस और मीडिया में होने वाली अच्छी कवरेज का ज़िक्र फ़रमाया। जलसा सालाना को प्रिंट मीडिया, रेडियो, टीवी और सोशल मीडिया के ज़रिए वसी पैमाने पर नश्र किया गया, जबकि विभिन्न ख़बरनामों/अख़बारात और टीवी चैनलों ने भी जलसे की कवरेज की।

ख़ुतबे के इख़्तिताम पर हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: अल्लाह तआला इस जलसे के नेक असरात जहाँ जमाअत के अफ़राद पर क़ायम फ़रमाए वहीं लोगों की रहनुमाई भी फ़रमाए और उन्हें सहीह इस्लाम और अहमदिय्यत की तरफ़ राग़िब करे। आमीन।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक-9781831652
टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात, पंजाब- 18001032131